Date – 21/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Inference definition

Scanned with CamScanner

अनुमान की परिभाषा
(न्याय एवं नव्य न्याय)

अनुमान शब्द अनु और मान से मिलकर बना है। 'अनु' उपसर्ग है। यह 'मा' धातु से संयुक्त होकर 'मान' शब्द उत्पन्न करता है। 'मान' का अर्थ 'ज्ञान' है, और अनु का अर्थ 'बाद में' है। अतः व्युत्पत्ति की दृष्टि से अनुमान वह ज्ञान है जो 'बाद में' आता है। इसका तात्पर्य है कि अनुमान के पहले भी कोई ज्ञान है। पूर्व ज्ञान अनुमान का आधार है। उस पूर्व ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं। अतः प्रत्यक्ष पर आधारित जो ज्ञान हो, वही अनुमान है। इसलिए न्यायसूत्र के प्रणेता गौतम ने कहा है - तत्पूर्वकम् ज्ञानम् अनुमानम् (उसके पहले आने वाला ज्ञान अनुमान है। परंतु यह परिभाषा स्पष्ट नहीं है। "उसके पहले आने वाला ज्ञान" अनुमान है, का साधारण अर्थ अनुमान के पहले आने वाला ज्ञान अर्थात् प्रत्यक्ष है। इस परिभाषा के अनुसार प्रत्यक्ष ही अनुमान है जो असंगत है और इसमें पुनरावृत्ति या चक्रक दोष वर्तमान है। यही कारण है कि वात्स्यायन, जिन्होंने न्यायसूत्र पर भाष्य लिखा है, ने इस परिभाषा में निहित दोष को दूर करते हुए कहा है कि 'उसके' (तत्) शब्द के दो अर्थ हैं - लिंगलिंगी का ज्ञान और लिंग का ज्ञान।

लिंगी के साथ लिंग का संबंध होने पर किसी लिंग के ज्ञान के आधार पर व्याप्ति का स्मरण होता है। व्याप्ति-स्मरण के बाद होने वाले लिंग के ज्ञान से जिस अप्रत्यक्ष या अज्ञात वस्तु या घटना का ज्ञान होता है, उसे अनुमान कहते हैं। वात्स्यायन की इस परिभाषा में निम्नलिखित तत्व पाये जाते हैं -

(क) लिंगी अर्थात् साध्य और लिंग अर्थात् हेतु का संबंध।

(ख) किसी लिंग अर्थात् हेतु का ज्ञान।

(ग) व्याप्ति-स्मरण।

(घ) व्याप्ति-स्मरण के पश्चात् हेतु का ज्ञान।

(ङ.) अप्रत्यक्ष या अज्ञात वस्तु या घटना अर्थात् साध्य का ज्ञान।

इस परिभाषा के अनुसार साध्य और हेतु के संबंध का ज्ञान पहले से होता है। यह ज्ञान प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त होता है। इसी प्रत्यक्ष के आधार पर जब हेतु का ज्ञान होता है, तो पहले देखे गये साध्य और हेतु के संबंध की याद आती है। साध्य-हेतु के संबंध को

Scanned with CamScanner

व्याप्ति कहते हैं, और इसकी याद व्याप्ति-स्मरण कहलाती है। व्याप्ति-स्मरण के बाद पुनः हेतु का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। इस हेतु-ज्ञान के आधार पर अप्रत्यक्ष या अज्ञात साध्य का ज्ञान होता है। इसे एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है।

हर व्यक्ति बचपन से जन्म-मरण की घटना का प्रत्यक्ष करता रहा है। इस आधार पर पहले देखे गये उन मनुष्यों की याद आती है, जो मर चुके हैं, अर्थात मृत्यु और मनुष्य के बीच के अनिवार्य संबंध (व्याप्ति) का स्मरण होता है। इस स्मरण के आधार पर पुनः उस व्यक्ति को देखकर विश्वास किया जाता है कि वह मनुष्य है। इसलिए निष्कर्ष निकाला जाता है कि वह अनिवार्यतः मरेगा। यही साध्य का ज्ञान है, और यह साध्य ज्ञान अनुमान है।

जो भी मनुष्य है, वह मरता है। (हेतु-साध्य संबंध)
सीता मनुष्य है। (हेतु-ज्ञान)
सभी मनुष्य मरणशील हैं। (व्याप्ति-स्मरण)
सीता मनुष्य है। (व्याप्ति-स्मरण के बाद हेतु-ज्ञान)
सीता मरणशील है। (साध्य-ज्ञान)

प्रथम तर्कवाक्य हेतु-साध्य के संबंध अर्थात व्याप्ति-ज्ञान को बतलाता है। दूसरा तर्कवाक्य व्याप्ति-ज्ञान के बाद हेतु का प्रत्यक्ष ज्ञान बतलाता है। तीसरा तर्कवाक्य व्याप्ति-ज्ञान का स्मरण करता है। चौथा तर्कवाक्य व्याप्ति-स्मरण के बाद हेतु का पुनः प्रत्यक्ष ज्ञान ~~कराता~~ कराता है। पाँचवां तर्कवाक्य साध्य का ज्ञान बतलाता है। हेतु-साध्य का संबंध अर्थात व्याप्ति-ज्ञान को प्रत्यक्ष के आधार पर ही जाना जाता है। हम अपने अनुभव में बचपन से एक-एक व्यक्ति को मरते देखते हैं और समझ जाते हैं कि मनुष्य और मृत्यु में अनिवार्य अर्थात व्याप्ति संबंध है। इस प्रकार अनुमान के लिए दो पद प्रमुख हैं- साध्य और हेतु। उनके बीच संबंध होना अनिवार्य है। इसी संबंध के आधार पर हेतु-ज्ञान से साध्य-ज्ञान प्राप्त होता है। मनुष्य और मृत्यु (हेतु और साध्य) का आधार एक है, और वह है- संसार। अतएव अनुमान में केवल व्याप्ति नहीं, पक्षता का होना भी आवश्यक है। हेतु का पक्ष में होना ही पक्षता है; संसार में मनुष्य का जन्म होता है, और मृत्यु भी संसार में ही होती है; अतएव अनुमान व्याप्ति और पक्षता दोनों पर निर्भर करता है। ~~और~~ अनुमान ~~वाक्य की उत्पत्ति को~~
~~देखा~~ ~~जाए~~ को